HINDI

(Three hours)

*(Candidates are allowed additional 15 minutes for **only** reading the paper.*

They must NOT start writing during this time.)

---

*Answer questions **1, 2** and **3** in Section **A** and **four** other questions from Section **B** on at least **three** of the prescribed textbooks.*

*If you answer **two** questions on any **one** book, do not base them both on the **same** material.*

The intended marks for questions or parts of questions are given in brackets [ ].

SECTION A

1. Write a composition in HINDI in approximately 400 words on any ONE of the topics given below :— [20]

निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** विषय पर लगभग **400** शब्दों में **हिन्दी** में निबन्ध लिखिये :—

(a) महानगरों में बढ़ती जनसंख्या—कारण और समाधान।

(b) 'तकनीकी विकास ने मानव को सुविधाओं का दास बना दिया है।'—पक्ष या विपक्ष में अपने विचार लिखिए।

(c) संगीत मन की अभिव्यक्ति है। बताइए वर्तमान संगीत मानव-मन की किन भावनाओं का परिचायक है।

(d) 'वृक्ष अपने काटने वालों को भी छाया, फल और लकड़ी देता है।'—प्रस्तुत पंक्ति को आधार बना कर एक लेख लिखिए।

(e) यदि आपको टेलीविज़न के बिना समय बिताने के लिए बाध्य किया जाए, तो आप अपना समय किस प्रकार व्यतीत करेंगे और क्यों ?

(f) निम्नलिखित विषयों में से किसी **एक** पर मौलिक कहानी लिखिए :—

(i) दुर्घटना से देर भली।

(ii) कौआ चला हंस की चाल।

2. Read the following passage and briefly answer the questions that follow :—

निम्नलिखित अवतरण को पढ़कर, अन्त में दिए गए प्रश्नों के संक्षिप्त उत्तर लिखिए :—

एक बार भगवान बुद्ध राजगृह के सीतवन में ठहरे हुए थे। श्रावस्ती नगरी के सेठ सुदत्त भी वहाँ पधारे। सेठ सुदत्त बहुत दानी थे इसीलिए वे 'अनाथपिंडक' कहे जाते थे। अनाथों को तृप्त करने वाले अनाथपिंडक के द्वार पर आया हुआ कोई भी दीन अनाथ कभी खाली हाथ वापस नहीं जाता था।

भगवान बुद्ध से उन्होंने दीक्षा ली तथा श्रावस्ती नगरी में वापस लौटने से पूर्व कहा—"भगवन् ! आप श्रावस्ती नगरी में पधारें तथा अपने उपदेश से वहाँ के लोगों को ज्ञान दें।" महात्मा बुद्ध ने इस निमंत्रण

This Paper consists of 4 printed pages.

© *Copyright reserved.*

को सहज भाव से स्वीकार कर लिया। स्वीकृति पाकर अनाथपिंडक अति उत्साहित हुए। फिर सोचा, भगवान बुद्ध के आने के मार्ग में तो विश्राम आदि के लिए विहार बनवा दिए गए हैं, पर वे प्रवचन कहाँ देंगे, ठहरेंगे कहाँ ? उसके लिए तो ऐसा खुला स्थान चाहिए, जो नगर के पास हो, ताकि अधिक से अधिक लोग बुद्ध के उपदेशों से लाभ उठा सकें।

विचार करते-करते ध्यान आया कि यदि श्रावस्ती नगरी के राजकुमार का जेतवन मिल जाए, तो उससे अच्छा अन्य कोई स्थान न होगा। यह सोचकर अनाथपिंडक राजकुमार के पास गए और जेतवन खरीदने का प्रस्ताव रखा। अपने नगर के सेठ सुदत्त का यह प्रस्ताव सुनकर राजकुमार को आश्चर्य हुआ। राजकुमार सोचने लगे कि इस नगरसेठ का ऐसा दुस्साहस कि वह मेरा जेतवन खरीदने का प्रस्ताव ही कर बैठा। अनाथपिंडक के इस प्रस्ताव का उत्तर देते हुए राजकुमार ने कहा—"तुम मेरी प्रजा हो, नगर-सेठ हो, इसलिए तुम्हारा मान रखने के लिए मैं उसे अवश्य बेच दूँगा।"

अनाथपिंडक स्वीकृति पाकर खुशी के मारे उछल पड़ा। तनिक भी देर लगाए बिना पूछा—"राजकुमार ! मूल्य क्या होगा ?" राजकुमार बेचना तो नहीं चाहते थे क्योंकि पिछले वर्ष ही वह उद्यान उनके पिता राजा प्रसेनजित ने उन्हें उपहार में दिया था। फिर भी वे नगर-सेठ की हैसियत तथा साहस देखना चाहते थे। हँस कर कहा—"कुछ अधिक नहीं। जितनी स्वर्ण मुद्राएँ उस भूमि को ढक लें, बस, वही उसका मूल्य होगा।"

अनाथपिंडक के हृदय में भगवान बुद्ध के प्रति अपार श्रद्धा थी, गद्‌गद् होकर कहा—"राजकुमार ! मुझे स्वीकार है। मैं अभी इस भूमि पर स्वर्ण-मुद्राएँ बिछवाना प्रारम्भ करता हूँ।" ऐसा कह कर नगर-सेठ खड़ा हो गया।

राजकुमार ने कहा—"ठहरो नगर-सेठ ! मैंने तो तुम्हारी सामर्थ्य जानने के लिए ऐसे ही कह दिया था" अनाथपिंडक यह सुनकर हताश नहीं हुआ। विश्वास से कहा—"मैं आपको मुँह-माँगा मूल्य दे रहा हूँ। इसमें सामर्थ्य देखने की बात नहीं। आप एक राजपुत्र हैं, अपने वचन की रक्षा करना आपका धर्म है। अगर आप अपने वचन से मुकरेंगे, तो मैं यह मामला न्यायाधीश के पास ले जाऊँगा।"

राजकुमार ने भूमि देना अस्वीकार कर दिया। मामला न्यायाधीश के पास पहुँचा। न्यायाधीश ने विचार कर निर्णय दिया—"विक्रेता ने जब भूमि का मूल्य निर्धारित किया, तो निश्चय ही उसके पीछे, उस भूमि को बेचने का भाव उसके मन में था। वस्तुतः जो वस्तु बिकने के लिए नहीं होती, उसका कोई मूल्य नहीं होता, पर जब विक्रेता ने अपनी इच्छा से मूल्य माँगा और खरीदार ने वह देना स्वीकार कर लिया, तो सौदा पक्का माना जाएगा। राजकुमार को धन लेकर वह भूमि देनी होगी।"

न्यायाधीश के आदेश से राजकुमार विवश था। तब अनाथपिंडक ने अपने खजाने का मुँह खोल दिया। जेतवन की भूमि का एक-एक इंच सोने की मोहरों से ढका जाने लगा।

इधर राजकुमार को आश्चर्य हो रहा था, उधर अनाथपिंडक जेतवन की एक-एक इंच भूमि स्वर्ण-मुहरों से ढकती देखकर आनंदित हो रहा था। जब थोड़ी सी भूमि मुद्राओं से ढकनी शेष रह गई, तो राजकुमार का धैर्य चुक गया। चिल्ला उठे—"बस करो अनाथपिंडक ! यह सारी भूमि तुम्हारी हुई। मैं आज जान गया कि श्रद्धा-भावना धन की सीमा से बहुत ऊँची होती है। तुम जैसे नगर-सेठ को पाकर श्रावस्ती नगरी तथा समस्त प्रजा-जन धन्य हो उठे हैं।"

राजकुमार की यह बात सुनकर अनाथपिंडक स्तब्ध रह गया। थोड़ा संयत होकर उसने कहा—"राजकुमार ! यह कैसे हो सकता है ? मूल्य बिना दिए मैं भूमि कैसे ले लूँ ? ये मुद्राएँ तो आपको लेनी ही पड़ेंगी।"

सेठ सुदत्त के कथन को सुनकर राजकुमार कुछ देर सोचते रहे, फिर कहा—"समाधान के लिए मैं एक प्रस्ताव रखता हूँ कि भूमि तुम्हारी होगी, किन्तु इस पर बनने वाला विहार मेरी ओर से बनेगा। यह सारा धन भूमि के मूल्य के रूप में मेरा हुआ, पर मैं इसे ग्रहण नहीं करूँगा। मेरे इस सारे धन को तुम मेरी ओर से भगवान बुद्ध के विहार-निर्माण में लगा दो।"

राजकुमार की इस बात से नगर-सेठ सुदत्त और राजकुमार दोनों भाव-विह्वल हो गए। जो कुछ समय पूर्व वादी-प्रतिवादी बन कर एक दूसरे के विरुद्ध न्यायालय में शिकायत कर रहे थे, अब वे दोनों अश्रु भरे नेत्रों से एक दूसरे के गले लग रहे थे। यही बुद्ध की, बुद्धत्व की विजय थी।

बौद्धकाल में बुद्ध के उपदेशों ने जातीय भेद-भाव दूर कर आचरण की श्रेष्ठता की स्थापना की थी। हमारी संस्कृति को सँवारने में, व्यापक करने में, एक सूत्र में बाँधने में भगवान बुद्ध का बहुत बड़ा योगदान था क्योंकि उनका प्रवचन सीधे श्रोताओं के हृदय में उतर जाता था और उनके हृदय कपाट खुल जाते थे। बुद्ध के वचनों से यह स्पष्ट हो जाता था कि सच्चा सुख पाने के लिए धन-संपदा और सत्ता का होना ही पर्याप्त नहीं है।

प्रश्न :—

(a) सेठ सुदत्त कौन थे ? उन्हें किस नाम से पुकारा जाता था और क्यों ? [4]

(b) सेठ सुदत्त क्या सोचकर राजकुमार के पास गए थे ? उनके प्रस्ताव पर राजकुमार की क्या प्रतिक्रिया थी ? [4]

(c) जेतवन खरीदने का मामला न्यायाधीश के पास क्यों ले जाया गया ? न्यायाधीश ने क्या फैसला सुनाया और क्यों ? [4]

(d) सेठ सुदत्त की बुद्ध के प्रति श्रद्धा-भावना का राजकुमार पर क्या प्रभाव पड़ा ? [4]

(e) 'बुद्धत्व' से आप क्या समझते हैं ? सामाजिक भेद-भाव मिटाना क्यों आवश्यक है ? अपने विचार दीजिए। [4]

3. (a) **Correct the following sentences :—** [5]

निम्नलिखित वाक्यों को शुद्ध करके लिखिए :—

(i) देखते ही देखते लोगों के जादूगर के हाथ का फूल गायब हो गया।

(ii) बारह बजने को दस मिनट है।

(iii) तुम्हारे को मेरे से क्या कहना है।

(iv) तुलसीदास द्वारा रचित रामायण बहुत प्रसिद्ध ग्रन्थ है।

(v) देश के अन्दर भ्रष्टाचार फैल रही है।

(b) **Use the following idioms in sentences of your own to illustrate their meaning :—** [5]

निम्नलिखित मुहावरों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए वाक्यों में प्रयोग कीजिए :—

(i) आँखों में खटकना।

(ii) रोड़ा अटकाना।

(iii) नाक में दम करना।

(iv) थाली का बैंगन होना।

(v) एड़ी-चोटी का ज़ोर लगाना।

SECTION B
काव्य-तरंग

4. 'मौन-निमंत्रण' कविता के आधार पर सिद्ध कीजिए कि पंत प्रकृति के सुकुमार कवि हैं। इस कविता में कवि ने प्रकृति के किन-किन रूपों में परमात्मा की सत्ता का किस प्रकार अनुभव किया है ? [12½]

5. 'प्रियतम' कविता के आधार पर बताइए कि ईश्वर की सच्ची पूजा क्या है और विष्णु भगवान ने नारद की परीक्षा किस प्रकार ली ? आपने इस कविता से क्या सीखा ? [12½]

6. 'इन्सान बन कर आ रहा सवेरा है' कविता के आधार पर बताइए कि आशावाद मानव के लिए उपयोगी क्यों है तथा इन्सान किस प्रकार सवेरा बन कर निराशा का अंधकार मिटाने में सफल हो सकता है ? [12½]

निर्मला

7. "ईश्वर तुमसे भी न देखा गया ! मुझ दुखिया को तुमने यों ही अपंग बना दिया, अब आँखें भी फोड़ दीं ! अब वह किसके सामने हाथ फैलाएगी, किसके द्वार पर भीख माँगेगी"—प्रस्तुत पंक्तियों का संदर्भ बताते हुए, स्पष्ट कीजिए कि इस घटना का क्या परिणाम हुआ ? [12½]

8. बाबू भालचन्द्र का चरित्र-चित्रण कीजिए। बताइए कि भालचन्द्र जैसे व्यक्तियों से समाज को क्या हानि होती है ? [12½]

9. कथावस्तु की दृष्टि से 'निर्मला' उपन्यास की समीक्षा कीजिए और सिद्ध कीजिए कि 'निर्मला' उपन्यास यथार्थ के बहुत करीब है। [12½]

कथा-सुरभि

10. 'ऐसी होली खेलो लाल' किस प्रकार की कहानी है ? इसमें लेखक ने कैसी होली, किस प्रकार खेलने का आग्रह किया है और क्यों ? इस कहानी को पढ़कर आपके मन में क्या भाव जागृत हुए ? [12½]

11. माता-पिता को बच्चों से ऐसा व्यवहार नहीं करना चाहिए कि वे अपने हृदय की बात बता ही न सकें। 'पाजेब' कहानी के आधार पर बताइए कि आशुतोष के साथ कब और क्या अनुचित व्यवहार किया गया और उसकी आशुतोष के बाल-मन पर क्या प्रतिक्रिया हुई ? [12½]

12. 'कर्मनाशा की हार' कहानी में लेखक ने सामाजिक विसंगतियों पर तीखा व्यंग्य करते हुए, समाज को खोखला करने वाले अन्धविश्वासों पर चोट की है।—प्रस्तुत पंक्ति की समीक्षा कीजिए और बताइए कि समाज में अन्धविश्वास किस कारण पनपते हैं ? [12½]

ज्वालामुखी के फूल

13. महापद्मनन्द उग्रसेन का परिचय देते हुए, उनके चरित्र को आधार बनाकर सिद्ध कीजिए कि शक्ति का मद व्यक्ति को दम्भी, अदूरदर्शी और निरंकुश बना देता है। [12½]

14. मगध के भव्य राजप्रासादों से ठुकराये जाने की चाणक्य पर क्या प्रतिक्रिया हुई ? उन्होंने भारत के लिए किस प्रकार के राजा की कल्पना की थी ? आपकी दृष्टि में चाणक्य की सफलता का मूल आधार क्या था ? [12½]

15. "शत्रु ने उन्हीं की नीति का सहारा लेकर उनका ही नाश कर दिया। लज्जा के कारण उनका चेहरा काला पड़ गया।" प्रस्तुत पंक्ति में किस व्यक्ति की हताशा का वर्णन है ? मगध की तत्कालीन परिस्थितियों का वर्णन करते हुए सिद्ध कीजिए कि वीर शासक ही सेना को मनोबल प्रदान करता है। [12½]